बाल भारती पब्लिक स्कूल , पीतमपुरा

कक्षा - चौथी (01/12/2020 – 4/12/2020)

विषय - कहानी उपविषय – समदर्शी

शिक्षण अधिगम

- प्रत्येक छात्र पाठ का एक गद्यांश शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाने में सक्षम होगा।
- पाठ के संदेश को समझकर छात्र सहनशील, संवेदनशील, शिष्ट और सामाजिक बन सकेगा।
- पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र यह समझ सकेगा कि यदि कोई व्यक्ति आपसे कमज़ोर है या शारीरिक रूप से अक्षम है तो उसकी कमज़ोरी का कभी मज़ाक नहीं बनाना चाहिए।

भाव

इस कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों का मज़ाक न बनाने की प्रेरणा दी गयी है। वंशी की एक आँख खराब थी। उसकी कक्षा में आया नया लड़का सतीश उसका मज़ाक उडाता है और उसे समदर्शी नाम से चिढ़ाता है। आहत होकर वंशी घर में रोता है तब उसकी माँ उसे समझाती है |

कुछ दिनों बाद सतीश की आँख में गेंद से चोट लगती है और उसकी लापरवाही की वजह से उसकी आँख खराब होते - होते बचती है। ऑपरेशन के बाद उसे वंशी के दर्द का अनुभव होता है और अपनी गलती का एहसास होने पर वह वंशी से माफ़ी माँगता है और वे दोनों अच्छे मित्र बन जाते हैं।

विषय संवर्धन गतिविधियाँ:-

(मौखिक चर्चा)

- हेलेन केलर ,स्टेफन हॉकिंस या एलिस वॉकर के बारे में अध्यापिका विद्यार्थियों को संक्षेप में बताएँगी।
- क्या होता यदि सतीश का ऑपरेशन सफल न होता ?

नवीन शब्द

समदर्शी	असहनीय
हर्ष – विह्वल	ऑपरेशन
पश्चाताप	नसीहत
स्वस्थ	क्रोध
बरामद	व्यवहार
चेतावनी	अन्याय
आहिस्ते	प्रवेश

BBPC

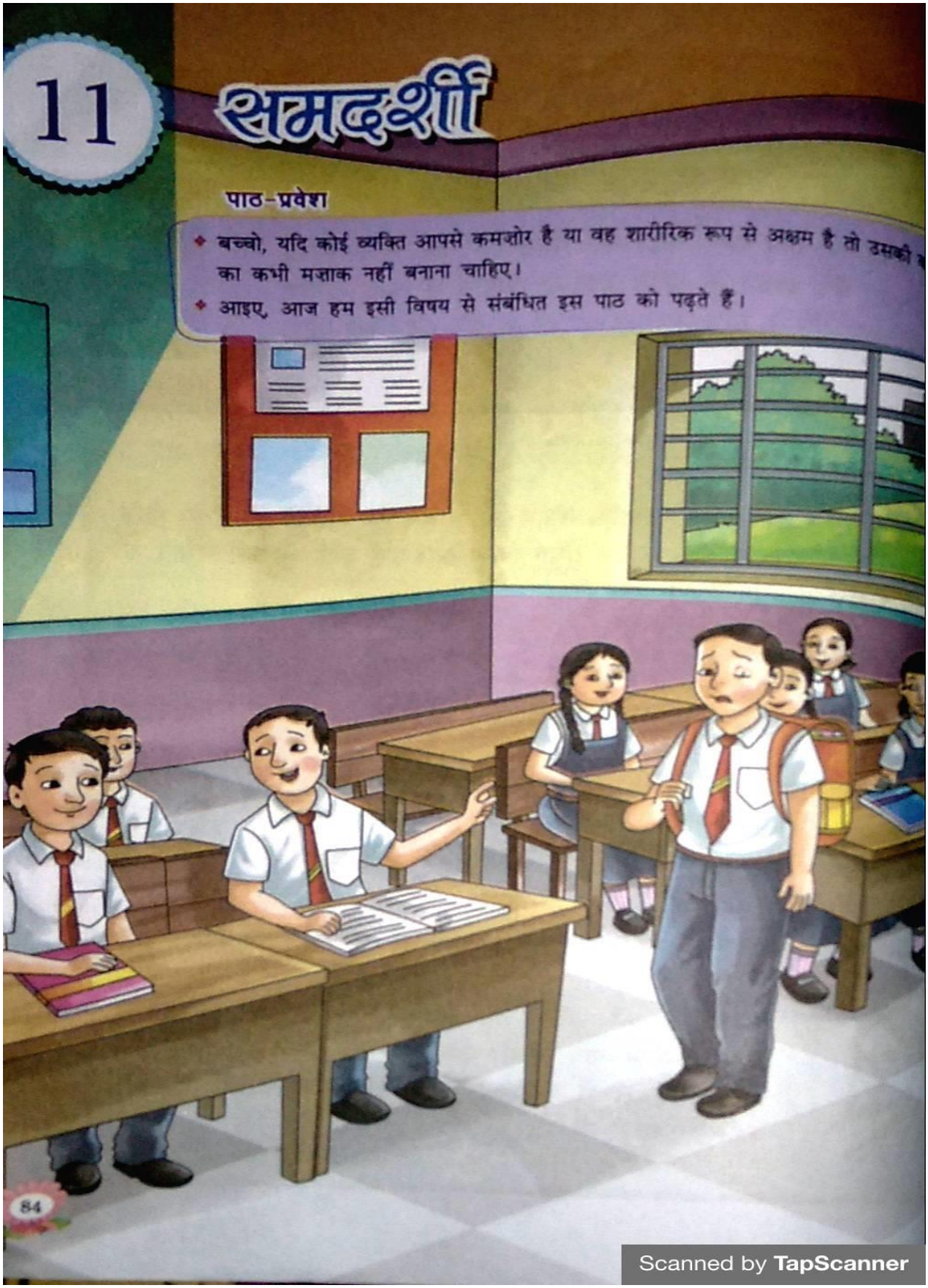
11
समदर्शी
पाठ-प्रवेश
बच्चो, यदि कोई व्यक्ति आपसे कमजोर है या वह शारीरिक रूप से अक्षम है तो उसकी
का कभी मज़ाक नहीं बनाना चाहिए।
आइए, आज हम इसी विषय से संबंधित इस पाठ को पढ़ते हैं।
84
Scanned by TapScanner

वंशी को अपनी एक आँख खराब होने का दुख न था, क्योंकि वह सोचता था कि इस संसार में और भी बहुत-से लोग हैं, जिनके अंगों में कोई न कोई खराबी है। आज तक किसी ने न तो मोहल्ले में और न स्कूल में ही उसे चिढ़ाया और न कोई उसपर कभी हँसा था। उनके व्यवहार से ऐसा लगता था जैसे उसकी दोनों आँखें सबकी तरह सलामत हैं और वह सबके जैसा ही है। लेकिन जब से सतीश ने उसकी कक्षा में प्रवेश लिया था, वंशी को लगने लगा कि उसके साथ अन्याय हुआ है। वैसे सतीश अच्छा लड़का था परंतु उसमें सबसे बड़ा ऐब यही था कि दूसरे में जब कोई कमी देखता तो फिर उसके पीछे ही पड़ जाता था।

कुछ समय बाद ही वह वंशी को 'समदर्शी' कहकर चिढ़ाने लगा। धीरे-धीरे सभी उसे इसी नाम से पुकारने लगे। इस कारण वंशी क्रोध व दुख से भर जाता।

एक दिन तंग आकर उसने कक्षा अध्यापक से शिकायत कर दी। कक्षा अध्यापक ने सतीश को नसीहत दी और कठोर दंड देने की चेतावनी दी। इसके बाद तो सतीश उसे और ज़्यादा परेशान करने लगा।

एक दिन वह घर आकर खूब रोया। पूरी बात सुनकर माँ ने समझाया, "मेरे लाल, ईश्वर ने ही बनाया है तुझे, वही तेरे लिए कुछ करेगा।"

दो दिन बाद ही खेलते समय सतीश की एक आँख पर गेंद की करारी चोट लगी। चोट गहरी थी। उसे अस्पताल ले जाया गया और फिर कई दिनों तक सतीश स्कूल नहीं आया।

एक दिन वंशी सतीश से मिलने गया। परंतु सतीश ने उससे मिलने से मना कर दिया।

आँख में थोड़ी राहत मिलते ही वह स्कूल चला आया। उसकी घायल आँख पर अब भी पट्टी बँधी थी।

कक्षा के बाहर बरामदे में खड़ा वह अपने साथियों को आपबीती सुना रहा था। वंशी चुपके से उसके पास जाकर उधर खड़ा हो गया, जिधर आँख पर पट्टी बँधी थी। फिर आहिस्ते से कान के पास मुँह ले जाकर बोला, "क्यों भाई, नज़र तो आ रहा हूँ न? मैं हूँ तुम्हारा दोस्त वंशी! तुम्हारे शब्दों में समदर्शी!"

Scanned by TapScanner

सतीश गुस्से से बोला, "समदर्शी जो है वही रहेगा। दो-चार रोज़ में पट्टी [illegible] जाएगी, फिर देखना कि समदर्शी कौन है!"

दूसरे दिन वह स्कूल आया, तो उसकी आँख पर पट्टी न थी। आँख बुरी [illegible] लाल थी। असहनीय दर्द होता था। मम्मी ने समझाया भी था, लेकिन वह न मान[illegible] और पट्टी फेंककर स्कूल चला आया था। सतीश के साथियों ने उसको कहा, "[illegible] किया तुमने सतीश, इतनी जल्दी आँख पर से पट्टी उतार दी। कुछ हो गया तो?"

सारा दिन उसने बेचैनी में गुज़ारा। दर्द से बेहाल सतीश घर जाते ही बिस्त[illegible] चित हो गया। उसे कुछ होश न था। कब मम्मी-पापा आए, कब डॉक्टर को बुल[illegible] कब आँख पर वापस पट्टी बँधी, उसे कुछ पता न था। डॉक्टर अंकल उसके पिता[illegible] के गहरे दोस्तों में से थे। इसीलिए शायद पिता जी को डाँट रहे थे, "खयाल रखना [illegible] तुम्हें! अब भुगतो। दुआ करो कि ऑपरेशन कामयाब हो...!"

"आँख की झिल्ली से खून रिस रहा है, जो बड़ा खतरनाक साबित हो सकता है[illegible] सुनकर सतीश डर गया, "उफ़! अब मैं क्या करूँ? क्या मैं भी समदर्शी बन जाऊँ[illegible] सब मेरी ही गलती है। मैं ही वंशी को तंग करता था। उसने तो हमेशा सहनशीलता[illegible] काम लिया था। मैंने ही भूल की। काश मैं ही दो-चार दिन के लिए उसकी तरह [illegible] कर पाता। आँखों से पट्टी न खोलता। अब न जाने क्या होगा? ऑपरेशन में क्या हो[illegible] कहीं आँख चली गई, तो!..." वह इन्हीं विचारों में था कि नींद ने उसे घेर लि[illegible] सुबह जब उसे अस्पताल ले जाने की तैयारी होने लगी, तो वह मुँह से कुछ न बो[illegible]

ऑपरेशन हुआ और सफल रहा। डॉक्टर अंकल ने पापा को बधाई देते हुए क[illegible] "अब तो पंद्रह दिन पट्टी न खोलने देना।" पापा हर्ष-विह्वल हो कुछ कहने जा[illegible] थे कि सतीश बीच में ही बोल उठा, "डॉक्टर अंकल! जब तक आप नहीं कहेंगे, प[illegible] नहीं खोलूँगा।"

जितने दिन सतीश की आँखों पर पट्टी बँधी रही, वह विभिन्न विचारों में [illegible] रहा। 'समदर्शी' अब उसे वंशी के नाम से याद आता था।

जब आँखें स्वस्थ हो गईं, तो वह स्कूल गया और अपने साथियों से सबसे प[illegible] वंशी के बारे में पूछा। इतने में वंशी आता दिखाई दिया, तो सतीश लपककर उ[illegible]

Scanned by TapScanner

पास पहुँचा और उसे बाँहों में भर लिया, "मेरे अच्छे दोस्त! मुझे माफ़ कर दो। अब मैं तुम्हें कभी नहीं चिढ़ाऊँगा।"

—[illegible]